एकलव्य

Parag Honour List 2020

बकरी की साइकिल

बच्चों की कूची, बच्चों की कलम

बकरी की साइकिल

बच्चों की कूची, बच्चों की कलम

एकलव्य

बकरी की साइकिल

BAKARI KI CYCLE

बच्चों की कूची, बच्चों की कलम

इस किताब में शामिल रचनाएँ एकलव्य के फील्ड कार्यक्रमों से विकसित हुई हैं।

आवरण चित्रः देव जगत, तीसरी, भोपाल
डिज़ाइनः कनक शशि
डिज़ाइन सहयोगः राकेश खत्री
सम्पादकीय सहयोगः टुलटुल बिस्वास, सीमा, दीपाली शुक्ला और शिवनारायण गौर

इस किताब का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

संस्करणः नवम्बर 2018 / 2000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रणः जनवरी 2020 / 3000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो 210 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
ईडेलगिव फाउंडेशन और पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN: 978-93-85236-51-8
मूल्यः ₹ 75.00

प्रकाशकः **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, जाटखेड़ी,
भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोनः +91 755 - 297 7770, 71, 72, 73
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल, फोनः +91 755 268 7589

सूरज कुमार, तीसरी

कहानी

फसलों की कटाई (दिव्या साहू) 05
भूत (बाबूलाल) 07
नींद खुल गई (आदिल) 09
मैंने साइकिल चलाई (मजीदुन निशा) 11
गुजरन माई (अरुणा अराडिया) 13
अस्पताल की घटना (अर्जुन सिंह धुर्वे) 15
दिनचर्या (पूजा बागवान) 16
हमारे डॉक्टर (नेहा वर्मा) 17
हमें बुरा लगा (गिरजा अराडिया) 18
घटना (किरण पटैल) 19
होली (रवि) 20
भैंस (प्रदीप यादव) 21
बारिश में फँसा कुत्ता (लक्ष्मी भारती) 22
सड़क (सौरभ यादव) 23
गुन्डी गुमी (बबली भलावी) 25
आग लगी पर बच गए (अलीशा जहाँ) 26
बकरी की साइकिल (सुनील चौधरी) 28
हैंडबॉलः सत्य घटना (अपूर्वी सिनेरिया) 30
चिटा और चिटी के करम (अमित मीना) 32

चित्र

सूरज कुमार 02
मुस्कान यादव 04
अमन 06
सीनम अंसारी 07
आलोक 08
निहाल बागमारे 09
पवन भारती 10
राजीव 12
रानी समोने 14
अजय धुर्वे 16
राहुल धनगर 17
प्रीति वमन 18
निकेश मारन 19
नैना मरसले 20
अनिशा प्रजापति 21
प्राची टेकम 22
अंशु वर्मा 23
राधिका धुर्वे 24
शिवराज 27
नीरज 29
गुड़िया धुर्वे 30
दीपम 32

चित्रः मुस्कान यादव, सातवीं, भोपाल

फसलों की कटाई

दिव्या साहू
आठवीं, डापका, होशंगाबाद

फसलों को काटने के लिए मजदूर की जरूरत होती है। यहाँ मजदूर मिलते नहीं हैं तो किसान लोग दूसरे गाँव से मजदूर लाते हैं। फिर कटाई शुरू होती है तो वे पैसे की बात करते हैं। फिर किसान उन्हें पैसे देते हैं। वे पूरा काट देते हैं। हम बोलते हैं कि तुम पचासी भी लगाते जाना और वे पचासी नहीं लगाते फिर हम उन्हें पैसे कम देते हैं। वे पैसे लेने से इंकार कर देते हैं। तो फिर हम बोलते हैं तुमने पचासी भी तो नहीं लगाई इसलिए हमने कम पैसे दिए हैं। फिर वह कुछ नहीं बोलते। फसलों को खिरान में लाते हैं। फिर उसे थ्रेसर से निकाल देते हैं। फिर दूसरी फसल बोना शुरू कर देते हैं।

चित्रः अमन, तीसरी, भोपाल

भूत

बाबूलाल
पाँचवीं, भोपाल

एक दिन की बात है कि रात में मैं टॉयलेट के लिए घर से निकला। टॉयलेट करने के बाद मैं घर की ओर चलने लगा कि तभी एक भूत नजर आया। तो मैं बहुत डर गया था। मैंने दौड़के घर के अन्दर जाकर माताजी को जगाया और यहाँ की सारी बात बताई। तो मेरे माता-पिता ने जल्दी से घर के बाहर आकर देखा तो भूत घर के ऊपर बैठा था।

इतने में भूत चिल्लाया और रोया। मैं बहुत घबरा गया। तभी भूत अचानक गायब हो गया। मुझे रोना आ गया। माँ ने बोला बेटे क्यों रो रहा है? रोना बन्द कर और घर के अन्दर चलकर सोजा।

तभी एक बार ही डर लगा था। बस उस दिन की याद आ गई थी। मैं सुबह उठा और चाय पी। खाना खाया और पाठशाला आकर मैंने अपनी टीचर को सारी बात बताई। टीचर बोली कि डरने की कोई बात नहीं है। सब ठीक हो जाएगा।

चित्रः सीनम अंसारी, छठवीं, भोपाल

चित्रः आलोक, तीसरी, भोपाल

चित्रः निहाल बागमारे, तीसरी, भोपाल

नींद खुल गई

आदिल
सातवीं

एक बार मैं जंगल में आम तोड़ रहा था तभी एक शेर मेरे पीछे खड़ा था। तभी मेरी नजर शेर पर पड़ी तो वह मेरे पीछे आने लगा। मैं घबरा गया। फिर मैं बहुत तेज भागने लगा। आड़े तेड़े रास्ते थे, लेकिन मैं भागता गया। एक पेड़ की डाल लटकी थी मैं उस पर चढ़ गया। तभी शेर चला गया। फिर मैंने सोचा मैं घर कैसे जाऊंगा। तभी वहाँ से एक हाथी पेड़ के पास से निकल रहा था कि मैं उसकी पीठ पर कूद गया। लेकिन वह जंगली, उसने मुझे सूंड़ से फेंका। मैं एक पेड़ पर जा फिका और नीचे आ गिरा। तभी दूसरे हाथी ने मेरी छाती पर पैर रखा तो मेरी नींद खुल गई।

चित्रः पवन भारती, सातवीं, लहगडुआ, तामिया, छिन्दवाड़ा

मैंने साइकिल चलाई

मजीदुन निशा
आठवीं, भोपाल

बात तब की है जब मैं पाँचवीं क्लास में पढ़ती थी। और ठण्डी का महीना था। सुबह आठ बजे स्कूल जाती और दोपहर बारह बजे घर आती। खाना खाकर किराए की साइकिल चलाती। वैसे भी मुझे साइकिल चलाना ठीक से नहीं आता था। एक दिन मैं सुबह-सुबह आठ बजे स्कूल जा रही थी। मेरे साथ मेरा भाई भी पढ़ता था। वो भी मेरे साथ था। हम दोनों स्कूल पहुँचे। पढ़ाई-लिखाई की। दस बजे लंच हुआ। हम सब दोस्तों ने खाना खाया। अम्बिका मेरी तब बेस्ट फ्रैन्ड थी। आज वह साइकिल लाई थी। वह साइकिल लाई और बोली निशा चल अपन साइकिल चलाते हैं। मेरे को तो साइकिल चलाना बहुत पसन्द था। मैं बहुत खुश हुई। फिर मैं, अम्बिका, सीमा, पूजा और साथ में मेरा भाई भी था। सबसे पहले अम्बिका ने मुझे बिठाकर साइकिल चलाया। फिर उसने बोला - निशा ले तू चला। सीमा बोली मुझे बिठाकर चला। मैं साइकिल पर बैठी और पीछे सीट पर सीमा भी। मैंने साइकिल चलाना शुरू किया। साइकिल चलाते समय साँय-साँय चलती हवा बहुत ठण्डी और अच्छी लग रही थी। हम लोग जहाँ पर साइकिल चला रहे थे वहाँ ढलान थी। साइकिल चलाते-चलाते ढलान खत्म होने वाली थी पर मुझे अजीब टाइप का डर लगा, डर के मारे साइकिल हिलने लगी। मेरा भाई ढलान के आखरी हिस्से पर खड़ा था। मैंने चिल्लाया रोक। मेरे भाई ने साइकिल का हेण्डल पकड़ लिया। साइकिल टेढ़ी होकर गिर गई। सीमा और मैं साइकिल समेत भड़ाम से गिरे। मुझे तो बिल्कुल चोट नहीं आई, पर सीमा का घुटना छिल गया। और खून बहने लगा। जब से तोबा कर लिया जब तक मैं सही से साइकिल नहीं सीख पाऊँगी कभी साइकिल नहीं चलाऊँगी। अब मैं आठवीं क्लास में हूँ। अब मुझे अच्छी तरह से साइकिल चलाना आ गया।

गुजरन माई

अरुणा अराडिया
सातवीं, लिम्बोदा, देवास

एक दिन हम सब लसोन लगाने गई थीं। हमारे साथ गुजरन गई थी। तो मैं पीछे रह गई थी तो भाग कर गई। तो मैं उस गुजरन माँ से टकरा गई। उसने कहा कि तू मुझसे टकरा गई। तूने मेरा भोजन अबड़ा दिया। मैंने कहा माँ हम इंसान हैं तुम हमसे क्या अबड़ाती हो। उस माँ ने कहा कि तेरे मम्मी से कहना पड़ेगा। तू बहुत बोले लग गई है और मुझे चुप कर दिया।

चित्रः राजीव, आठवीं, भोपाल

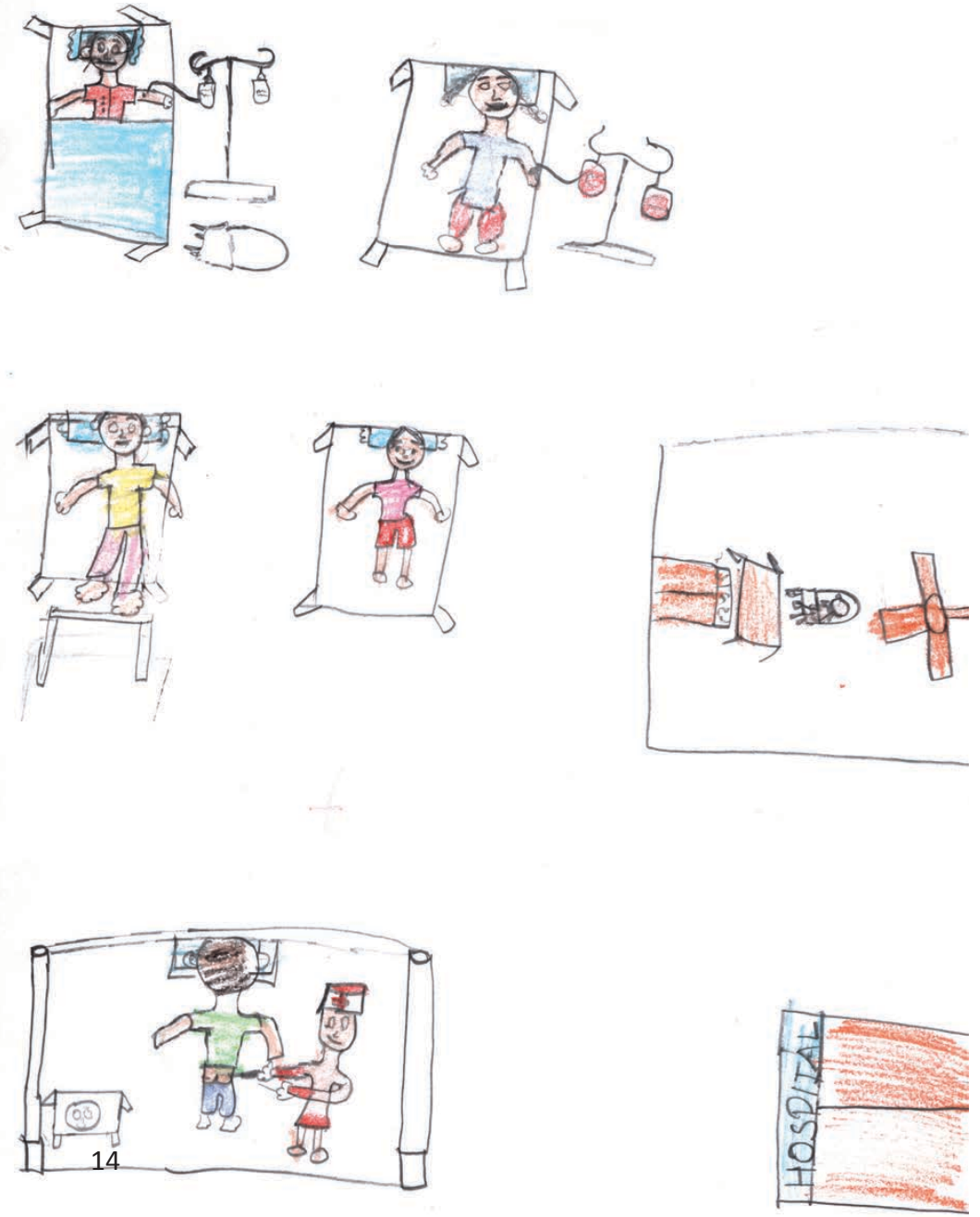

चित्रः रानी समोने, छठवीं, भोपाल

अस्पताल की घटना

अर्जुन सिंह धुर्वे
आठवीं, शुक्करवाड़ा
फार्म, होशंगाबाद

शायद एक साल पुरानी बात है। मुझको बहुत तेज बुखार था। सिर बहुत तेज दुख रहा था और ऐसा लग रहा था कि मुझे कुछ ही देर में उल्टी आएगी पर उल्टी नहीं आ रही थी। जी घबरा रहा था। मम्मी ने सिर पर झंडुबाम लगाकर गीली पट्टी रखी पर फिर भी बहुत तेज बुखार था। सिर बहुत जोर से दुख रहा था।

फिर मम्मी बोली चल अस्पताल चलते हैं। अस्पताल गए तो वहाँ बहुत भीड़ थी। करीब आधे घंटे बाद मेरा नम्बर आया। फिर डॉक्टर ने चेक करने के बाद एक पर्ची दी। फिर इंजेक्सन लगता है। उस कमरे में गए तो उसने दो इंजेक्सन लगाए और एक बोटल लाने को बोला। पापा बोटल लाए फिर कम्पोडर ने बोटल लगाया। मुझको पहली बार बोटल लग रही थी। मुझे बहुत डर लग रहा था। पर दवाई जो नली द्वारा मेरे शरीर में जा रही थी उसकी गति बहुत कम थी। मेरे बाएँ हाथ साइट में एक बहुत बुजुर्ग आदमी को भी बहुत जोर से बुखार आया था। वह वेहोश था जब मेरे बोटल लग रही थी। पर कुछ ही देर बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसको जो बोटल लगी थी उसका दवा जाना बंद हो गया। उनके बेटे शोर शराबे के कारण उनकी बहन और माँ को यह नहीं बता रहे थे कि बाबूजी इस दुनिया में नहीं रहे। लेकिन उनको पता चल गया था कि बाबूजी नहीं रहे और वह बहुत जोर से रो रहे थे।

चित्रः अजय धुर्वे, आठवीं, तामिया, छिन्दवाड़ा

दिनचर्या

पूजा बागवान
छठवीं, चिकलोदा

मैं सुबह 6.30 बजे उठती हूँ। और उठकर ब्रश करती हूँ और ब्रश करने के बाद चाय पीती हूँ। और सुबह नहाने के लिए पानी लाती हूँ। नहाकर तुलसी माँ की पूजा करती हूँ। फिर खाना बनाती हूँ। मेरे भाई का टिफीन भरती हूँ। फिर मैं बरतन साफ करती हूँ। फिर खाना खाती हूँ। खाना खाकर स्कूल के लिए तैयार होती हूँ। फिर स्कूल जाती हूँ। फिर सर प्रार्थना करते हैं।

स्कूल से घर आकर हाथ मुँह धोती हूँ। फिर चाय बनाती हूँ। चाय पीते हैं। फिर चाय के बरतन साफ करते हैं। आदि।

हमारे डॉक्टर

नेहा वर्मा
आठवीं, भयावाड़ी, शाहपुर, बैतूल

हमारे गाँव में डॉक्टर हैं। उन्होंने बायो सबजेक्ट से पढ़ाई की। वह पढ़ाई करने शाहपुर जाते थे। उनका फाइनल पूरा नहीं हुआ। उनका नाम भगवानदास था। उन्होंने पढ़ाई छोड़कर मरीज का इलाज करने का काम सीखा। वे गाँव के मरीज के भगवानदास छोटे डॉक्टर बने थे। किसी को बुखार आता तो वे पहले गोली देते थे। अगर बुखार न उतरे तो इंजेक्सन लगाते थे। भगवानदास मरीज देखने जाते थे तो कभी मरीज घर पर भी आ जाते थे। किसी को लग जाए तो बहुत घाव होता तो टांके लगाते। किसी को बोटल लगाते। किसी को इंजेक्सन लगाते। अगर इंजेक्सन मेहंगा वाला होता है तो उसकी फीस 50 रूपये लेते हैं। वे दवाई गोली शाहपुर से लाते हैं। उनके पास थर्मामीटर है। वे बुखार आने पर थर्मामीटर से चेक करते और उसके हिसाब से गोली देते। जहाँ दर्द होता वहाँ चेक करते और पता करते कि दर्द कहाँ हो रहा है। कभी खून की कमी रहती है तो आँखों को देखते हैं और बताते हैं कि खून की कमी है। फिर वे खून की जाँच करते हैं। पता लगाते कि खून खराब तो नहीं हुआ। अगर खराब हुआ तो उसे वहाँ एक सुई गड़ाकर खराब खून को निकालते हैं।

चित्रः राहुल धनगर, आठवीं, भोपाल

हमें बुरा लगा

गिरजा अराडिया,
सातवीं

एक दिन मैं और मेरी सहेलियाँ हम सब कन्या भोज में लिम्बोदा गईं। तब वहाँ दूसरी जाति की लड़कियाँ भी थीं। तो परोसने वाले लोगों ने उन्हें पहले परोसा और हमें बाद में। उन्हें मेन जगह पर बिठाया और हमें बाहर मैदान में बिठाया। और उन्होंने भोजन खाया उस थाली को उन लोगों ने उठाकर फैंका और हमने भोजन खाया उस थाली को हमें फैंकने को कहा। यह सब देखके हमें बहुत बुरा लगा।

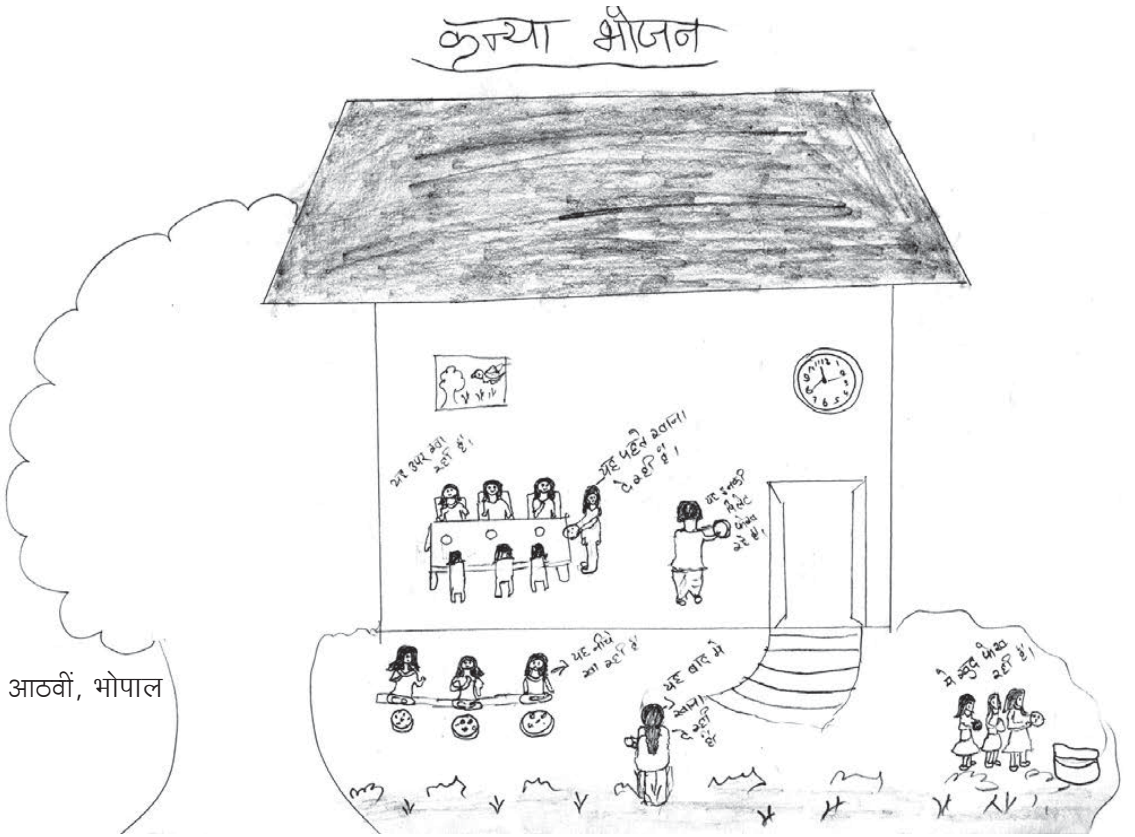

चित्रः प्रीति वमन, आठवीं, भोपाल

घटना

किरण पटैल
छठवीं, राईखेड़ी

एक दान मैं छोटी अनहोनी गई थी तो मैं भा सपड़ रही थी। तो वा कुआ गहरी थी। वा में सब कोई सपड़ रए थे। तो मैंने कई का देखु तो कितो तातो पानी हैंगो। तो मैंने जैसे ही वा में लात रखी तो मैं वा में गुप-गुप हो गई। मेरे तो हाथई हाथ दिखा रए थे। तो फिर मेहे हेच लओ। फिर हम घरे आ रए थे तो मैंने टेक्टर पे से बालटी फेंक दई तो बा टेक्टर में दूचली हो गई।

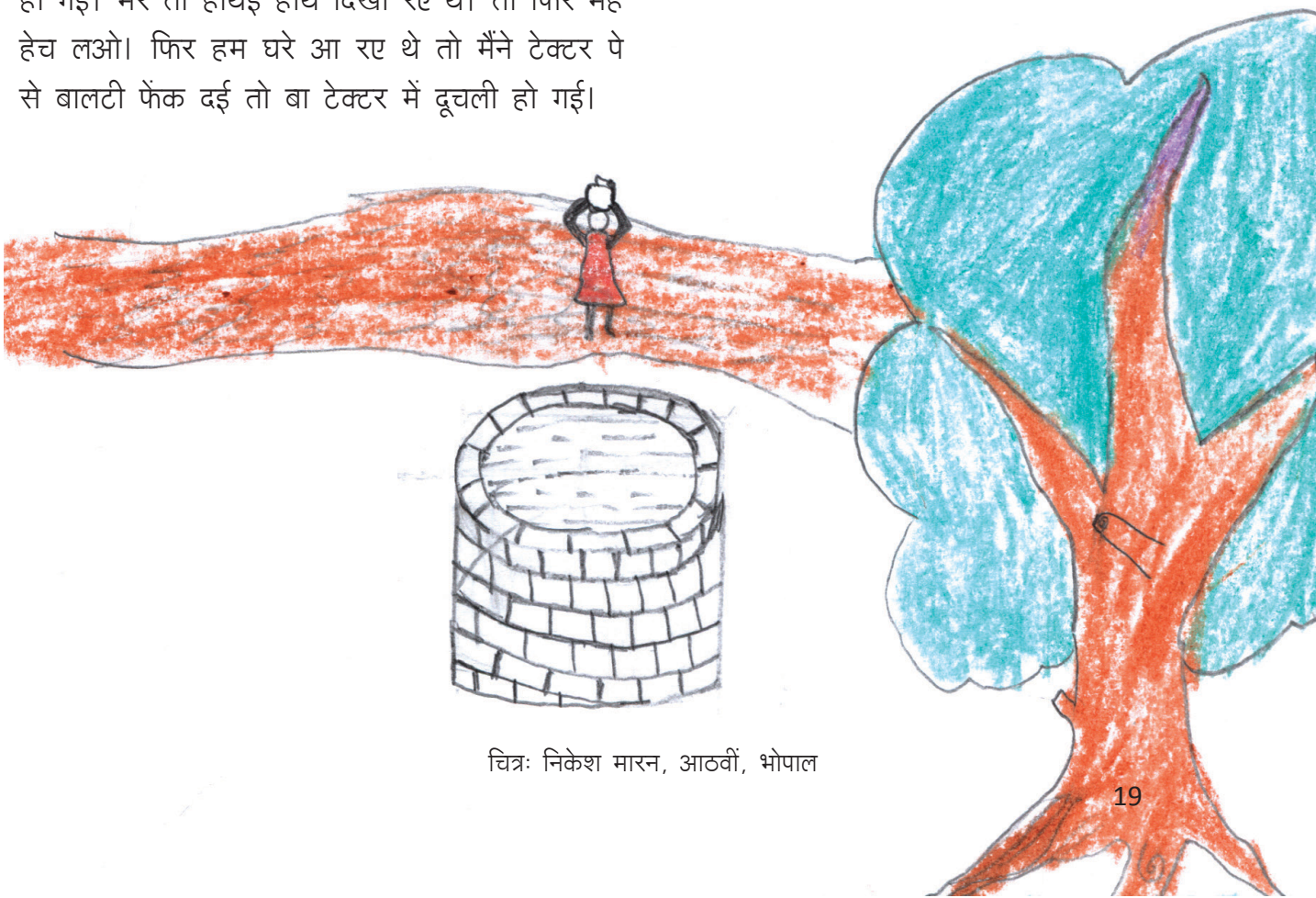

चित्रः निकेश मारन, आठवीं, भोपाल

होली

रवि
सातवीं

होली गरीबों का त्यौहार है। और होली साल में एक बार आती है। और सब लोग होली की तैयारी में लग जाते हैं। फिर होली जला देते हैं। फिर सुबह होली की पूजा करते हैं। फिर होली खेलते हैं। होली में सब लोग नशा करते हैं। और कोई-कोई तो दारू पीकर मरते हैं। कोई पिचकारी मारता है। तो कोई रंग डालता है। होली पे सब लोग पुराने कपड़े पहनते हैं और फिर भी सब होली खेलते रहते हैं। सब होली का प्रसाद भी चढ़ाते हैं। हम सब भी होली खेलते हैं।

चित्रः नैना मरसले, आठवीं, भोपाल

भैंस

प्रदीप यादव
सातवीं

हमारे घर एक भैंस है। उसका नाम "राधा" है। हमारे पापा उसको लगाते समय अच्छे से राधा नाम से पुकारते हैं। जब वो जनी थी तो उसका दूध पीला-पीला था। हमारे पापा ने उसको दरिया बनाके खिलाया था। उसके दूध की बरई बनाई थी वो बहुत अच्छी लगती है। उसके बच्चे का नाम "शनि" है। उसको हम अन्दर बांधते हैं। हमारी भैंस को हमारे पापा जंगल में चराने ले जाते हैं। शाम को हमारी मम्मी राई लाती है। हम घर जाकर खली-चुनी उमराकर रखते हैं। फिर हम काटते हैं और भूसा मिलाकर उसे खिलाने के लिए रखते हैं। फिर हमारे पापा उसे लगाते हैं। हमारी भैंस बहुत अच्छी है।

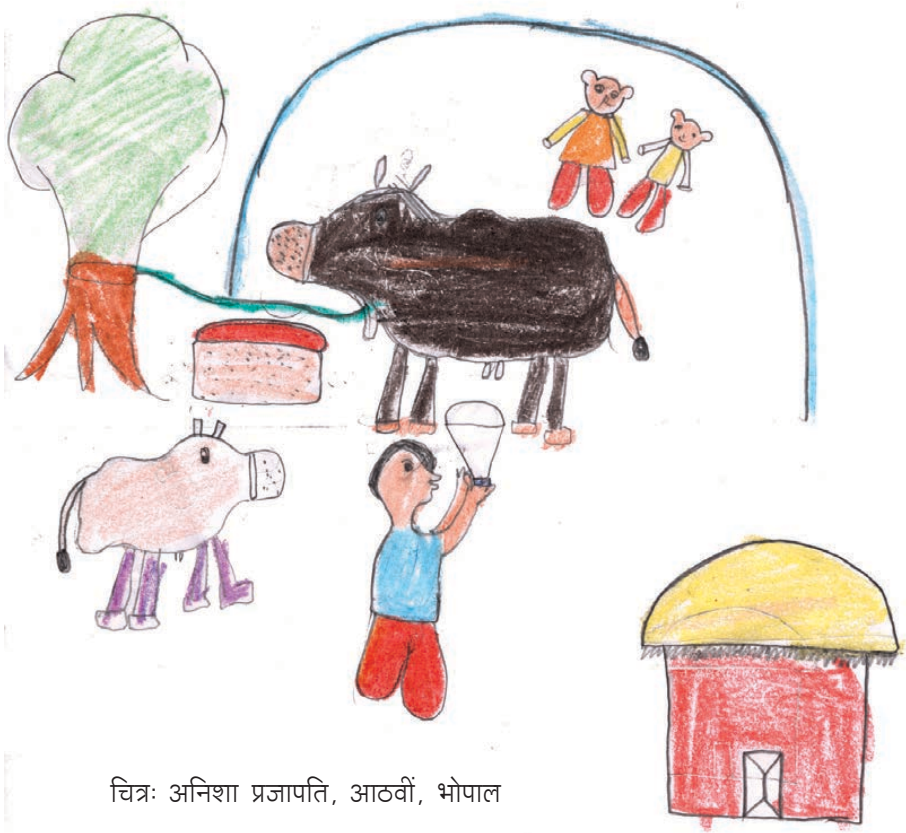

चित्रः अनिशा प्रजापति, आठवीं, भोपाल

बारिश में फँसा कुत्ता

लक्ष्मी भारती
आठवीं, भोपाल

बादल से बहुत तेज बिजली कड़की और बारिश आई। और एक कुत्ता कीचड़ में फँस गया। वहाँ से एक राजू नाम का लड़का जा रहा था। तो उसने देखा कि कुत्ते का पैर रस्सी में उलझ गया था और बारिश भी तेज से आ रही थी। तो राजू ने उस रस्सी से उलझा हुआ कुत्ते का पैर निकाला और कुत्ते को लेकर झाड़ियों के पीछे दोनों छिप गए। फिर थोड़ी देर बाद बारिश बंद हो गई। राजू उस कुत्ते को लेकर अपने घर की ओर चल पड़ा और रास्ते में उसका पैर फिसल गया। फिर वह उठ गया। तो उसके सारे मोहल्ले वाले कुत्ते और राजू को देखकर मन ही मन बुदबुदाने लगे। फिर कुछ बच्चों ने रास्ते में उन दोनों के ऊपर रंग डाल दिया। तो उन दोनों को बहुत अच्छा लगा और वो दोनों मस्त होकर उछलते कूदते घर चल दिए। तो राजू के भाई अजय ने घर जाकर बता दिया कि माँ, भैया एक गंदे कुत्ते को लेकर आ रहा है। घर का भेदी लंका ढाहे। और वह घर आए तो माँ को कुत्ता बहुत प्यारा लगा और माँ ने रख लिया।

चित्रः प्राची टेकम, आठवीं, भोपाल

सड़क

सौरभ यादव
सातवीं, मनवाड़ा, होशंगाबाद

प्राय-प्राय पूरे प्रदेश में सड़क बन गई है मगर मनवाड़ा से लगाकर चपलासर तक मुरम का नाम ही नहीं। चपलासर से दूध वाले होशंगाबाद दूध बेचने जाते हैं तो वह झालसर में अपनी मोटर साइकिल रख जाते हैं और चपलासर से दूध का डिब्बा सर पर रख कर लाते हैं। कई बार वह गिर जाते हैं तो दूध बगर जाता है। गुराडिया से आने वाले छात्र छात्राओं को परेशानी होती है। कई बार तो छात्र या छात्रा गिर जाते हैं तो उनका बस्ता कीचड़ में खराब हो जाता है एवं स्कूल के कपड़े खराब हो जाते हैं। तो भारत सरकार को छात्र छात्रा की ओर से विनम्र निवेदन है कि मनवाड़ा से लगाकर चपलासर तक जल्द से जल्द सड़क बनवाई जाई।

चित्रः अंशु वर्मा, सातवीं, भोपाल

गुन्डी गुमी

बबली भलावी
पाँचवीं, चिरमा टेकरी,
बीचढाना, शाहपुर, बैतूल

चित्रः राधिका धुर्वे, सातवीं, तामिया, छिन्दवाड़ा

एक लड़की थी। वो पानी लेने जा रही थी तो एक गुन्डी भूलकर चली गई। फिर उसकी माँ ने उससे पूछा कि दीपा आपने गुन्डी कहाँ छोड़ दी। दीपा ने बोली माँ गुन्डी तो नल पर ही छोड़ दी। माँ ने बोली दीपा तुम जल्दी वापस नल पर ही जाओ। दीपा ने बोला माँ तुम घबराओ मत मैं अभी तुम्हारी गुन्डी ला दूंगी। माँ ने बोली अपनी गुन्डी कोई भी ले जाएगा तो तुम पानी किस में लाओगी। दीपा ने नल पर जाकर एक लड़की से पूछा कि रोशनी तुम मेरा गुन्डी ले तो नहीं गई। रोशनी ने बोली दीपा तेरी गुन्डी तो मेरे घर में नहीं है। दीपा ने बोली तो कहाँ गई। रोशनी ने बोली चलो अपून दोनों पूरो गाँव में ढूंढेंगे। दीपा ने बोली चलो नई तो मेरी माँ मैको मारेगी। रोशनी ने बोली सबसे पहले रानी के घर जाएंगे फिर सोनम। सोनम के घर पर ही मिल गई। दीपा बोली आज के बाद मेरा गुन्डी ले जाओगी तो मैं तेरा रिपोट कर दूंगी। सोनम ने बोली ठीक है अब नहीं ले जाऊंगी।

आग लगी पर बच गए

अलीशा जहाँ
आठवीं, भोपाल

जब मैं 9 साल की थी जब मेरे घर के पड़ोस में आग लग गई थी। वो भी रात के 12 बजे। फिर हमने पुलिस को फोन किया। पुलिस आई तो लेकिन चिता देखकर चली गई। फिर दूसरी पुलिस को फोन की। फिर दूसरी पुलिस आई और अपने साथ पानी का टेंकर भी लाई, आग बुझाने के लिए क्योंकि बहुत तेज लगी थी आग। हमारे मोहल्ले वाले सब अपने-अपने घरों से भाग रहे थे और जिनके बच्चे सो रहे थे तो उनको भी उठाया। मेरे घर के बाजू वाले घर में आग लगी थी वह तो आधा जल ही गया था। फिर जब तक पुलिस आई और आग बुझाई नालियां गरम हो गई थीं। ठंड का मौसम था। सब डर गए थे और मेरा भाई तो उठ ही नहीं रहा था। और मैं बहुत डरी हुई थी। मैंने आगे वाले कमरे का गेट खोला और निकल आई। और फिर आग की लपटें निकल रही थीं। फिर भी मेरी मम्मी ने घर में जाकर सबको उठाया और घर में जो कीमती सामान था वह उठाकर चल दी। सब ने अपने सिलेण्डर बाहर निकाले। जो तेल की कुप्पी थी उसे भी बाहर निकाला। जब पुलिस और पानी का टेंकर आया तो सब खुश हुए। इसलिए खुश हुए के अब तो सब का घर बच जाएगा। हमारे पड़ोस में एक कमलेश नाम की अंटी रहती है। वह बहुत रो रही थी क्योंकि उनका घर उनकी आँखों के सामने जल रहा था। जो अंटी जली थी उनका नाम खेमवती था।

चित्रः शिवराज, चौथी, भोपाल

बकरी की साइकिल

सुनील चौधरी
आठवीं, भोपाल

एक बकरी साइकिल चलाते-चलाते तालाब के किनारे आ गई। उधर पर एक शेर के बच्चे ने दहाड़ना सीखा। बकरी ने धीरे से फुसफुसाया। शेर के बच्चे ने तालाब में झांका तो उसे तालाब में एक चिमनी दिखी। शेर मंद-मंद मुस्कुराना सीखा। बकरी शेर के पास गई। शेर ने पूछा, कैसी हो बकरी रानी। बकरी ने कहा मस्त हूँ। शेर ने कहा "अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना" इसका क्या अर्थ है। बकरी ने कहा इसका अर्थ है - जैसे तुम्हारे पास एक हिरण का बच्चा आया था और तुमने उसे खा लिया इस प्रकार हिरण ने अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार ली। और बकरी अपने घर चली गई।

चित्रः नीरज, तीसरी, भोपाल

हैंडबॉलः सत्य घटना

अपूर्वी सिनेरिया
आठवीं, भोपाल

चित्रः गुड़िया धुर्वे, दसवीं, भोपाल

जब मैं छठवीं क्लास में थी तब सन् 2010 की बात है। तब मैंने पहली बार खेल में भाग लिया था। तब कभी घर से बाहर खेलने जाना पड़ता था। तो मैं घर से दूर नहीं रह पाती थी। तब मेरा गेम अच्छा नहीं था। मेरा खेल हैंडबॉल है। जब मुझे खेलना नहीं आता था तब दूसरी टीम के लोग मुझसे बात करना भी पसन्द नहीं करते थे और मेरी टीम के लोग भी मुझसे अच्छे से बात नहीं करते थे। मैं हमेशा अकेले रहती थी। मेरा पहला नेशनल हिमाचल प्रदेश में लगाया जिसमें मुझे भेजा था। तब भी मेरा गेम इतना अच्छा नहीं था। मैं भोपाल से एक अकेली लड़की थी। हमारी मध्य प्रदेश की टीम बनकर गई थी।

उसमें इन्दौर और जबलपुर की लड़कियाँ भी थीं जो बहुत घमण्डी थीं। वह मुझसे बात करना भी पसन्द नहीं करती थीं। मुझे उनके साथ दस दिन रहना था। हिमाचल प्रदेश में हम सब एक एकेडमी में रुके थे। मुझे उनके साथ बहुत बुरा लगता था। हमारे साथ जो सर गए थे वह बहुत बेकार थे। मेरी कोच मेरे साथ नहीं गई थी। सर का नाम मनीष था। इन्दौर और जबलपुर की लड़कियाँ और उनके मनीष सर

इतने खराब थे कि उन्होंने मुझे दिल्ली के स्टेशन पर छोड़ दिया और वह सब न्यू दिल्ली पहुँच गए। जब हम लोग वहाँ से वापस आ रहे थे तब यह सब हुआ। हम जाते समय जून महीने की 2 तारीख सन् 2011 को निकले तो वापस 11 तारीख को लौट रहे थे। तभी हम सब सुबह 7 बजे दिल्ली के स्टेशन पर उतरे।

ट्रेन से उतरने के बाद न्यू दिल्ली जाने लगे तो वह स्टेशन पर मुझे छोड़ गए। वह लोग पीछे लौट गए और मैं भीड़ में छूट गई। तब मुझे उन्हें खोजते-खोजते आधा घण्टा हो गया लेकिन मुझे कोई भी नहीं मिला। तब मुझे दिल्ली में एक आंटी और दीदी मिली जिन्होंने मुझसे सब कुछ पूछा। तब मैंने उन्हें बताया कि वह लोग मुझे छोड़ गए। तब उन्होंने मुझसे उनका नम्बर माँगा। मेरे पास उनका नम्बर भी नहीं था। मेरे पास सिर्फ मेरी बहिन का नम्बर था। तब उन्होंने मेरी बहिन को फोन लगाया और सर का नम्बर माँगकर उन्हें फोन लगाया और उन्हें खूब चिल्लाया और डाँटा। तब सर ने उन्हें कहा कि हम लोग उसे लेने स्टेशन आ रहे हैं। तब वह स्टेशन आकर मुझे ले जाने लगे। वह दीदी किसी नारी संस्था में काम करती थी। उन्होंने हमारे सर को खूब डाँटा और मुझे अपना नम्बर दिया और कहा कि अगर ये लोग तुम्हें डाँटे या कुछ भी कहे तो मुझे फोन लगा देना। मैं इन पर केस करूँगी। तब सर ने माफी माँगी और मुझे अपने साथ ले आए और उन्होंने मुझे भोपाल छोड़ दिया। तब मैंने सोच लिया था कि मैं कभी भी अपने कोच के बिना बाहर खेलने नहीं जाऊँगी। मेरी कोच ने मेरा गेम बहुत अच्छा कर दिया। अब मुझे सब पसन्द करने लगे। सब मुझसे अच्छे से बातें करते हैं। अगर हम खेलने जाते हैं तो मुझे यह कहा जाता है कि मैं सबसे अच्छा खेलती हूँ।

चिटा और चिटी के करम

अमित मीना
आठवीं

एक चिटा और एक चिटी थे। वे दोनों घर बनाकर रहते थे। वे दोनों घर में सुखी रहते थे। एक दिन कुछ गुन्डे उन दोनों के घर में घुस गए। ले जाने के लिए कुछ भी नहीं मिला तो वह चिटा की एक टांग काट के ही ले गए और चिटी की दो टांग काट के भी नहीं ले गए सीधे उखाड़ के ही ले गए। और बाजार में ले जाकर चिटा की एक टांग और चिटी की दो टांग बेच दी। चिटी बोली हमने अगले जन्म में क्या बुरे करम किए थे।

चित्रः दीपम, आठवीं, भोपाल

कुछ रचनाएँ ऐसी जो आसपास की दुनिया का इतना बारीक अवलोकन परोसती हैं कि पढ़ते हुए आपकी आँखें खुली की खुली रह जाएँ। कुछ रचनाओं में कल्पना की ऐसी उड़ान कि आप बरबस हँसते जाएँ या शायद सहम ही जाएँ। चित्रों में आप सिर्फ नज़ारा ही नहीं, एक नज़रिया भी देख पाएँ। ऐसी हैं लगभग 7-8 साल से लेकर 15-16 साल तक के इन रचनाकारों की जादुई दुनिया।

एकलव्य

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

मूल्यः ₹ 75.00

9 789385 236518